गिरगिट

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

ख्यूक्रिन कौन था? उसने मुआवज़ा पाने की क्या दलील दी?

Answer:

ख्यूक्रिन पेशे से एक सुनार था। एक कुत्ते ने उसकी उँगली काट ली थी। इस पर उसने इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव से शिकायत करते हुए मुआवज़े की माँग की। उसने मुआवज़ा पाने के लिए दलील दी कि वह एक कामकाजी आदमी है और उसका काम पेचीदा किस्म का है। उसे काठगोदाम से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था। इस कुत्ते ने अकारण उसकी उँगली में काट लिया, जिसके कारण अब वह एक हफ़्ते तक काम नहीं कर सकेगा। इससे उसे काफ़ी नुकसान होगा और उसकी आजीविका कैसे चलेगी। यही दलील देकर उसने कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा दिलाने की प्रार्थना की।

Question 2.

ओचुमेलॉव की दो चारित्रिक विशेषताओं को अपने शब्दों में उल्लेख लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ओचुमेलॉव की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **अस्थिर चित्त का व्यक्ति**– ओचुमेलॉव एक अस्थिर चित्त का व्यक्ति था। वह क्षण-क्षण अपना निर्णय बदलता था। एक क्षण पहले जो कुत्ता उसे भद्दा, मरियल और आवारा लग रहा था। दूसरे ही 'क्षण' कुत्ते के मालिक की हैसियत जानकर वही कुत्ता उसे 'सुंदर डॉगी' नज़र आने लगा। शिकायत कर्ता पर ही दोष मढ़ने में उसने, तनिक भी देर न लगाई। ये घटनाएँ उसकी अस्थिर वृत्ति को ही दिखाती हैं।

(*ii*) **अवसरवादी/मौकापरस्त**– ओचुमेलॉव अत्यधिक मौकापरस्त इंसान था। थाली के बैंगन की तरह वह जहाँ अपना लाभ देखता वहीं लुढ़क जाता था। कभी वह आम आदमी का पक्ष लेता नज़र आता है, तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ ही खिलवाड़ करता नज़र आता है। उसका एक मात्र उद्देश्य था– स्वार्थपूर्ति करना।

(*iii*) **नितांत स्वार्थी एवं मक्कार**– ओचुमेलॉव ने ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहरा दिया था। वह कुत्ते का पक्ष लेकर जनरल साहब से शाबाशी चाहता था। उसने अपने सिपाही येल्दीरीन से कहा कि वह उस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाए। उसने यह संदेश भी भिजवाया कि यह कुत्ता उसे मिला था। उसने (ओचुमेलॉव) ने ही यह कुत्ता उनके पास भिजवाया है, ऐसा करके वह जनरल साहब से लाभ उठाना चाहता था।

(*iv*) **चापलूस प्रवृत्ति**– ओचुमेलॉव बहुत चापलूस था वह पहले ख्यूक्रिन का पक्ष लेकर कुत्ते को भला-बुरा कहता रहा। उसे जैसे ही पता चला कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है तो वही कुत्ता उसे सुंदर 'डॉगी' लगने लगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ओचुमेलॉव अत्यंत चालाक, स्वार्थी, अवसरवादी, भ्रष्ट तथा मक्कार व्यक्ति था।

Question 3.

'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए कि ख्यूक्रिन कौन था? वह मुआवज़ा क्यों चाहता था?

Answer:

ख्यूक्रिन पेशे से एक सुनार था। एक कुत्ते ने उसकी उँगली काट ली थी। इस पर उसने इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव से शिकायत करते हुए मुआवज़े की माँग की। उसने मुआवज़ा पाने के लिए दलील दी कि वह एक कामकाजी आदमी है और उसका काम पेचीदा किस्म का है। उसे काठगोदाम से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था। इस कुत्ते ने अकारण उसकी उँगली को काट खाया, जिसके कारण अब एक हफ़्ते तक उसकी उँगली काम करने लायक नहीं रहेगी, इससे उसे काफ़ी नुकसान होगा। इस प्रकार यह दलील देकर ही उसने कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा दिलवाने की प्रार्थना की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 4.

'गिरगिट' कहानी के इस शीर्षक के औचित्य पर अपने विचार विस्तार से व्यक्त कीजिए।

Answer:

किसी भी रचना का शीर्षक नायक-नायिका, किसी घटना, उद्देश्य या किसी संदेश के आधार पर भी रखा जा सकता है। शीर्षक प्रतीकात्मक भी हो सकता है। प्रस्तुत कहानी 'गिरगिट' का शीर्षक एक प्रतीकात्मक शीर्षक है। गिरगिट एक ऐसा जीव होता है जो शत्रु से स्वयं को बचाने के लिए आस-पास के वातावरण के अनुसार अपना रंग बदल लेता है। प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र ओचुमेलॉव भी ऐसा ही व्यक्ति है। वह अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार अपनी बात, व्यवहार और दृष्टिकोण को बार-बार बदल लेता है। वह वास्तव में अवसरवादी है और गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला है। कभी वह आम आदमी के साथ हो जाता है, तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ खिलवाड़ करता है। उसके व्यक्तित्व में स्थिरता नहीं है। जब तक ओचुमेलॉव को यह पता नहीं चलता कि ख्यूक्रिन को काट खाने वाला कुत्ता जनरल साहब का या उनके भाई का है, तब तक वह कुत्ते व उसके मालिक को कानूनी तौर पर सबक सिखाने का निर्णय करता है। लेकिन जैसे ही उसे यह पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, वैसे ही उसे कुत्ता खूबसूरत व बेकसूर नज़र आने लगता है। कहानी के लिए 'गिरगिट' शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि यह ओचुमेलॉव के व्यक्तित्व की अस्थिरता, चापलूस प्रवृत्ति एवं गिरगिट की तरह रंग बदलने की भावना को प्रकट करने के लिए उपयुक्त है।

2015
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए कि इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन पर क्यों झुँझला रहा था?

Answer:

इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन पर झुँझला रहा था क्योंकि वह बार-बार अपनी कटी हुई उँगली दिखाकर कुत्ते के मालिक से हरजाना दिलवाने की माँग कर रहा था।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 6.

'गिरगिट' पाठ में येल्दीरिन ने ख्यूक्रिन को उसके दोषी होने के क्या कारण बताए?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

येल्दीरिन एक सिपाही था। वह ओचुमेलॉव के साथ ही काठगोदाम आया था तथा ख्यूक्रिन की बातें सुनकर उसने अपने साथी ऑफ़िसर का ही साथ दिया और ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहराने लगा। उसने ख्यूक्रिन पर दोषारोपण करते हुए कहा कि वह हमेशा कोई-न-कोई शरारत करता रहता है। उसने ही जलती हुई सिगरेट से कुत्ते की नाक जला डाली होगी, तभी कुत्ते ने इसे काटा है। दोष ख्यूक्रिन का है न कि कुत्ते का।

Question 7.

'गिरगिट' कहानी में किस पात्र को गिरगिट कहा जा सकता है और क्यों?

Answer:

'गिरगिट' कहानी में हम पुलिस इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव को गिरगिट कह सकते हैं, गिरगिट एक ऐसा जीव होता है जो वातावरण एवं तापमान के अनुसार अपना रंग बदल लेता है। प्रस्तुत पाठ में भी इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव एक मात्र ऐसा पात्र है जो परिस्थितियों के अनुसार रंग बदलता रहता है तथा किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देता। उसे हर अवसर का लाभ उठाना आता है। वह स्वार्थी, चापलूस किस्म का इंसान है, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। वह हर क्षण अपना रंग बदलता है। वह बेकसूर और निर्दोष लोगों को डराकर उनसे फ़ायदा उठाना चाहता है, अपने अफ़सरों की चापलूसी करता है। वह स्वयं को बचाने के लिए कुछ भी कर सकता है। पाठ में ख्यूक्रिन के प्रति उसका बदलता व्यवहार यह सिद्ध करता है कि वह ही गिरगिट है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 8.

'गिरगिट' कहानी समाज में व्याप्त चाटुकारिता पर करारा व्यंग्य है। इसे पाठ के आधार पर सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'गिरगिट' कहानी समाज में व्याप्त चाटुकारिता पर करारा व्यंग्य किया है। ओचुमेलॉव को जब यह विश्वास हो गया कि यह कुत्ता जनरल साहब का ही है तब उसने अपने सिपाही येल्दीरीन से कहा कि इस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाओ। उनसे यह कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापस उनके पास भेजा है। ऐसा संदेश भिजवाने के पीछे ओचुमेलाव का उद्देश्य था अपने अफ़सरों के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करना। उनकी चापलूसी करके वह उनके ऊपर एहसान रखना चाहता था। साथ ही वह अपने अफ़सर के समक्ष स्वयं को योग्यवान एवं ज़िम्मेदार पुलिस अफ़सर सिद्ध करना चाहता था। इस चाटुकारिता के चलते उसका न्याय भी प्रभावित होता है और न्याय का चक्र अन्याय की ओर घूमने लगता है। साथ ही समाज में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद व 'मौकापरस्ती अपने पाँव पसारती जाती हैं। ऐसी व्यवस्था में आम आदमी न्याय से सदैव वंचित रह जाता है। भले ही प्रतिपक्षी एक कुत्ता ही क्यों न हो। आम आदमी का प्रतिनिधित्व करता ख्यूक्रिन ऐसे अफ़सरों के शोषण का शिकार बन जाता है; उसे दोषी करार दे दिया जाता है तथा समाज की हँसी का पात्र बना दिया जाता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 9.

'गिरगिट' पाठ में शासन की किन प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया है?

Answer:

'गिरगिट' पाठ में शासन में व्याप्त भाई-भतीजावाद, पक्षपातपूर्ण रवैया तथा चापलूसी जैसी प्रवृत्तियों पर करारा व्यंग्य किया गया है। शासक वर्ग के अधिकारी आम जनता के हितों की अनदेखी करके उच्च अधिकारियों को प्रसन्न रखने का हर संभव प्रयास करते हैं। ऐसी व्यवस्था में भुक्त भोगी को ही दोषी करार दे दिया जाता है। मौकापरस्त शासन व्यवस्था ने पद और प्रभाव का महिमा मंडन करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। ऐसी व्यवस्था में पीड़ित के लिए न्याय की बात करना अर्थहीन है। आज भी इस स्थिति में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है। आज भी समाज में शक्तिशाली वर्ग सभी प्रकार के अपराध करके साफ़ बच निकलता है। अधिकारी-वर्ग उन्हीं का बचाव कर आम जनता का शोषण करते हैं।

Question 10.

मुआवज़ा पाने के लिए ख्यूक्रिन ने क्या-क्या कारण दिए? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ख्यूक्रिन ने मुआवज़ा पाने के लिए दलीलें दीं कि वह एक कामकाजी आदमी है और उसका काम पेचीदा किस्म का है। उसे काठगोदाम से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था। कुत्ते ने अकारण उसकी उंगली काट ली, जिसके कारण अब एक हफ़्ते तक वह काम नहीं कर पाएगा। इससे उसे काफ़ी नुकसान होगा। इसी आधार पर उसने कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा दिलाने की प्रार्थना की थी।

Question 11.

'गिरगिट' पाठ के आधार पर ओचुमेलॉव की तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

ओचुमेलॉव की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **अस्थिर चित्त का व्यक्ति**– ओचुमेलॉव एक अस्थिर चित्त का व्यक्ति था। वह क्षण-क्षण अपना निर्णय बदलता था। एक क्षण पहले जो कुत्ता उसे भद्दा, मरियल और आवारा लग रहा था। दूसरे ही 'क्षण' कुत्ते के मालिक की हैसियत जानकर वही कुत्ता उसे 'सुंदर डॉगी' नज़र आने लगा। शिकायत कर्ता पर ही दोष मढ़ने में उसने, तनिक भी देर न लगाई। ये घटनाएँ उसकी अस्थिर वृत्ति को ही दिखाती हैं।

(*ii*) **अवसरवादी/मौकापरस्त**– ओचुमेलॉव अत्यधिक मौकापरस्त इंसान था। थाली के बैंगन की तरह वह जहाँ अपना लाभ देखता वहीं लुढ़क जाता था। कभी वह आम आदमी का पक्ष लेता नज़र आता है, तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ ही खिलवाड़ करता नज़र आता है। उसका एक मात्र उद्देश्य था– स्वार्थपूर्ति करना।

(*iii*) **नितांत स्वार्थी एवं मक्कार**– ओचुमेलॉव ने ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहरा दिया था। वह कुत्ते का पक्ष लेकर जनरल साहब से शाबाशी चाहता था। उसने अपने सिपाही येल्दीरीन से कहा कि वह उस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाए। उसने यह संदेश भी भिजवाया कि यह कुत्ता उसे मिला था। उसने (ओचुमेलॉव) ने ही यह कुत्ता उनके पास भिजवाया है, ऐसा करके वह जनरल साहब से लाभ उठाना चाहता था।

(*iv*) **चापलूस प्रवृत्ति**– ओचुमेलॉव बहुत चापलूस था वह पहले ख्यूक्रिन का पक्ष लेकर कुत्ते को भला-बुरा कहता रहा। उसे जैसे ही पता चला कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है तो वही कुत्ता उसे सुंदर 'डॉगी' लगने लगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ओचुमेलॉव अत्यंत चालाक, स्वार्थी, अवसरवादी, भ्रष्ट तथा मक्कार व्यक्ति था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 12.

'गिरगिट' कहानी में लेखक ने समाज की किन विसंगतियों की ओर संकेत किया है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज की कानून-व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। लेखक अंतोन चेखव ने बताया है कि शासन व्यवस्था पूर्ण रूप से चापलूसों और भाई-भतीजावाद के समर्थक अधिकारियों के भरोसे चल रही है। हर व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार अपनी बात को परिवर्तित करना अच्छी तरह से जानता है। चापलूस अधिकारी सही निर्णय नहीं लेते, जिसका असर समाज पर पड़ता है। पुलिस का व्यवहार आम आदमी के प्रति उपेक्षापूर्ण होता है जिसके कारण आम आदमी को न्याय नहीं मिल पाता। पुलिस सदा अपने तथा अपने बड़े अधिकारियों के हित की बात सोचती है। समाज में उच्च वर्ग का दबदबा है। उन्हीं का आदेश समाज की दिशा निर्धारित करता है, जबकि सामान्य व्यक्ति का अपराध दंडनीय हो जाता है। वर्तमान समाज में भी ऐसी विसंगतियों को देखा जा सकता है। हम देखते हैं कि चापलूस और रिश्वतखोर लोग निरंतर उन्नति कर रहे हैं। कानून और न्यास व्यवस्था में चारों ओर चापलूसों और भ्रष्ट लोगों का ही बोलबाला है। किंतु सफल होने के लिए इसी रास्ते को अपनाते जा रहे हैं। यद्यपि इन विसंगतियों को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु अभी अधिक सफलता नहीं मिल पाई है।

Question 13.

'गिरगिट' पाठ के शीर्षक का आधार पाठ में क्यों दिया गया है? अपने शब्दों में उत्तर देते हुए कोई अन्य शीर्षक कारण सहित सुझाइए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

किसी भी रचना का शीर्षक नायक-नायिका, किसी घटना, उद्देश्य या किसी संदेश के आधार पर भी रखा जा सकता है। शीर्षक प्रतीकात्मक भी हो सकता है। प्रस्तुत कहानी 'गिरगिट' का शीर्षक एक प्रतीकात्मक शीर्षक है। गिरगिट एक ऐसा जीव होता है जो शत्रु से स्वयं को बचाने के लिए आसपास के वातावरण के अनुसार अपना रंग बदल लेता है। प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र ओचुमेलॉव भी ऐसा ही व्यक्ति है। वह अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार अपनी बात, व्यवहार और दृष्टिकोण को बार-बार बदल लेता है। वह वास्तव में अवसरवादी है और गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला है। कभी वह आम आदमी के साथ हो जाता है तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ खिलवाड़ करता है। उसके व्यक्तित्व में स्थिरता नहीं है। जब तक ओचुमेलॉव को यह पता नहीं चलता कि ख्यूक्रिन को काट खाने वाला कुत्ता जनरल साहब या उनके भाई का है, तब तक वह कुत्ते के मालिक को कानूनी तौर पर सबक सिखाने का निर्णय लेता है। लेकिन जैसे ही उसे यह पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है वैसे ही उसे कुत्ता खूबसूरत व बेकसूर नज़र आने लगता है। कहानी के लिए 'गिरगिट' शीर्षक उपयुक्त है। इसके अन्य शीर्षक– चापलूस इंस्पेक्टर, अवसरवादी ओचुमेलॉव हो सकते हैं। ये शीर्षक ओचुमेलॉव के व्यक्तित्व की अस्थिरता एवं चापलूस प्रवृत्ति को प्रकट करने के लिए उपयुक्त हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 14.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

तुम सही कहते हो। जनरल साहब के सभी कुत्ते महँगे और अच्छी नस्ल के हैं, और यह– ज़रा इस पर नज़र तो दौड़ाओ। कितना भद्दा और मरियल-सा पिल्ला है। कोई सभ्य आदमी ऐसा कुत्ता काहे को पालेगा? तुम लोगों का दिमाग ख़राब तो नहीं हो गया है। यदि इस तरह का कुत्ता मॉस्को या पीटर्सबर्ग में दिख जाता, तो मालूम हो उसका क्या हश्र होता? तब कानून की परवाह किए बगैर इसकी छुट्टी कर दी जाती। तुझे इसने काट खाया है, तो प्यारे एक बात गाँठ बाँध ले, इसे ऐसे मत छोड़ देना। इसे हर हालत में मज़ा चखवाया जाना ज़रूरी है।

(क) इंस्पेक्टर ने कुत्ता जनरल साहब के नहीं होने के क्या प्रमाण प्रस्तुत किए?

(ख) गद्यांश के आधार पर ओचुमेलॉव के चरित्र पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) इंस्पेक्टर कुत्ते के साथ कैसा व्यवहार चाहता था?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) इंस्पेक्टर ने कुत्ता जनरल साहब का न होने का यह प्रमाण दिया कि उनके यहाँ सभी महँगे और अच्छी नस्ल के कुत्ते है, जबकि यह पिल्ला बहुत ही भद्दा और मरियल-सा है। जनरल साहब या कोई भी सभ्य व्यक्ति इतना सस्ता कुत्ता नहीं पालेगा।

(ख) प्रस्तुत गद्यांश में ओचुमेलॉव एक ऐसे इंस्पेक्टर के रूप में नज़र आता है जो एक तरफ़ तो अपने अफ़सरों और उनसे संबंधित वस्तुओं के विषय में पूर्ण जानकारी रखकर उनके प्रति अपनी वफ़ादारी दिखाता है। साथ ही वह आम व्यक्ति की मदद करने वाले इंस्पेक्टर के रूप में भी नज़र आता है जब वह कहता है कि उस कुत्ते को यूँ आवारा छोड़ने पर उसके मालिक को मज़ा चखाया जाएगा तथा ख्यूक्रिन को उसे बिना मुआवज़ा लिए ऐसे ही नहीं छोड़ देना चाहिए।

(ग) इंस्पेक्टर कुत्ते को मज़ा चखाना चाहता था। यहाँ तक वह उसे ख्यूक्रिन को काटने के अपराध में जान से मार देने तक को तत्पर हो गया था।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 15.

'गिरगिट' कहानी में शासक और पुलिस अधिकारी के किस रूप को उजागर किया गया है? क्या वह रूप आपको भी अपने परिवेश में दिखाई देता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'गिरगिट' कहानी में शासक और पुलिस अधिकारी के भ्रष्ट, अवसरवादी, पक्षपात एवं स्वार्थपूर्ण आदि रूप को उजागर किया गया है। पाठ में वर्णित ख्यूक्रिन, ओचुमेलॉव और पिल्ले से जुड़ी घटना में इन सब बुराइयों को प्रदर्शित करके लेखक ने सिद्ध किया है कि जिस समाज में शासन के अधिकारी कानून को अपने हाथों की कठपुतली बना लें, वहाँ न्यायसंगत कुछ भी नहीं हो सकता। कहानी में बताया गया है कि भ्रष्ट शासन व्यवस्था में कानून के रक्षक ही कानून को अपने हाथों की कठपुतली समझते हैं। कानून आम आदमी के लिए कुछ और तथा उच्च वर्ग के लिए कुछ और होता है। ऐसे समाज में न्याय व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाती है। कहानी में भी भ्रष्ट इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव, पिल्ले व ख्यूक्रिन से जुड़ी घटना में जनरल झिंगालॉव व उनके भाई के पक्ष में पल-पल गिरगिट की तरह रंग बदलता दिखाई देता है और जब-जब उसे ज्ञात होता है कि कुत्ता जनरल या जनरल के भाई का है, तब-तब वह पिल्ले को सुंदर-सा डॉगी कहते हुए ख्यूक्रिन को ही धमकाने लगता है।

हाँ, शासकों व पुलिस अधिकारियों का यह रूप हमें अपने परिवेश में भी देखने को मिलता है क्योंकि आज भी कुछ घटनाओं में अपने कर्तव्य को ताक पर रखकर पुलिस व शासन के अधिकारी उच्च वर्ग के पक्ष में निर्णय लेते दिखाई देते हैं।

Question 16.

'गिरगिट' कहानी में ख्यूक्रिन ने कुत्ते के काटने के बदले मुआवज़ा पाने की क्या दलीलें दीं? क्या आप उन दलीलों से सहमत हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

Answer:

'गिरगिट' कहानी में ख्यूक्रिन ने कुत्ते के काटने के बदले मुआवज़ा पाने के लिए ये दलीलें दीं कि वह एक कामकाजी आदमी है, उसका काम बहुत पेचीदा किस्म का है। उँगली जख़्मी होने के कारण वह लगभग एक हफ़्ते तक अपना कार्य नहीं कर सकेगा। इससे उसे गुज़ारा चलाने में मुश्किल होगी। अतः उसे कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा दिलवाया जाए। यदि वास्तव में, उसकी उँगली कुत्ते के काटने से जख़्मी हुई थी, तो मैं उसकी दलीलों से सहमत हूँ और उसे इन दलीलों के आधार पर कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा मिलना चाहिए था क्योंकि किसी की आजीविका प्रभावित होने की दशा में उसे गुज़ारे के लिए मुआवज़े की व्यवस्था होनी ही चाहिए।

Question 17.

जनरल साहब के भाई के साथ कुत्ते का संबंध जानकर ओचुमेलॉव के विचार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

जनरल साहब के भाई के साथ कुत्ते का संबंध जानने के बाद ओचुमेलॉव के विचारों में अप्रत्याशित परिवर्तन आया और वह कुछ देर पहले ख्यूक्रिन को दिए गए मुआवज़े के आश्वासन से पूरी तरह पलट गया। उल्टा उसीपर आरोप लगाने लगा, अब उसे वही मरियल-सा पिल्ला 'सुंदर-सा डॉगी' दिखाई देने लगा। ऐसा इसलिए क्योंकि वह एक भ्रष्ट, चापलूस तथा अवसरवादी इंस्पेक्टर था और दोषी होते हुए भी कुत्ते के मलिक यानी जनरल साहब के भाई के खिलाफ़ कोई कार्यवाही नहीं करना चाहता था।

Question 18.

'गिरगिट' शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए किसी अन्य उपयुक्त शीर्षक का कारण-सहित सुझाव दीजिए।

Answer:

कोई भी शीर्षक तभी सार्थक माना जाता है, जब वह अपनी विषयवस्तु से पूरी तरह मेल खाता है। इस गुण के आधार पर 'गिरगिट' एक सटीक व सार्थक शीर्षक है क्योंकि ख्यूक्रिन व पिल्ले से जुड़ी घटना में कहानी का मुख्य पात्र ओचुमेलॉव पल-पल गिरगिट के समान रंग बदलता दिखाई देता है। जब-जब उसे पता चलता है कि कुत्ता जनरल का न होकर किसी सामान्य आदमी का है, तब-तब वह ख्यूक्रिन को मुआवज़ा दिलवाने की बात कहता है, किंतु जब उसे पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब या उनके भाई का है, तब-तब वह सारा दोष ख्यूक्रिन के मत्थे मढ़ देता है।

हमारी राय में इस कहानी का अन्य उपयुक्त शीर्षक 'बेपेंदी का लोटा' या 'थाली का बैंगन' हो सकता है क्योंकि ये दोनों शीर्षक भी कहानी के मुख्य पात्र के चरित्र को उभारने में पूरी तरह सक्षम हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 19.

'गिरगिट' कहानी में समाज की किन विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है? क्या आप उन विसंगतियों को अपने समाज में भी देखते हैं? उनके निराकरण के लिए उपयुक्त सुझाव दीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, लोभ, चापलूसी, भाई-भतीजावाद, अवसरवाद, स्वार्थ आदि विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है। कहानी में बताया गया है कि भ्रष्ट शासन व्यवस्था में कानून के रक्षक ही कानून को अपने हाथों की कठपुतली समझते हैं। कानून आम आदमी के लिए कुछ और तथा उच्च वर्ग के लिए कुछ और होता है। ऐसे समाज में न्याय-व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाती है, लोगों में कानून का बहुत अधिक खौफ़ नहीं रह जाता। वे अपना उल्लू सीधा करने के लिए उच्च पदों पर बैठे अपने रिश्तेदारों तथा परिचितों के नाम का सहारा लेकर लोगों पर अपना प्रभाव जमाते हैं। ख्यूक्रिन व पिल्ले से जुड़ी घटना में ये सभी विसंगतियाँ सामने आती हैं।

हाँ, आज का समाज भी पूरी तरह से भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हो सका है। अतः हमें लगता है कि आज भी समाज में ये बुराइयाँ किसी-न-किसी रूप में अवश्य दिखाई देती हैं।

हाँ, इन बुराइयों से जागरूक होकर, इनके खिलाफ़ आवाज़ उठाकर तथा ऐसी बुराइयों में लिप्त लोगों का सामाजिक बहिष्कार करके दूर किया जा सकता है, किंतु ये प्रयास सरल नहीं है, बल्कि इन प्रयासों को दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 20.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं। और उसकी ऊँगली भी जीत के झंडे की तरह गड़ी दिखाई दे रही थी। ओचुमेलॉव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नामक सुनार था और इस भीड़ के बीचोंबीच, अपनी अगली टाँगें पसारे, नुकीले मुँह और पीठ पर फैले पीले दागवाला, अपराधी-सा नज़र आता, सफ़ेद बारज़ोई पिल्ला, ऊपर से नीचे तक काँपता पसरा पड़ा था। उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।

(क) ख्यूक्रिन नामक सुनार कैसी प्रवृत्ति का व्यक्ति था और कैसा नज़र आ रहा था?

(ख) भीड़ में वह अपनी उँगली का प्रदर्शन कैसे और क्यों कर रहा था?

(ग) कुत्ते की आँखों में आतंक की छाप क्यों थी?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) ख्यूक्रिन नामक व्यक्ति बहुत ही चालाक स्वभाव का व्यक्ति था। उस समय उसने जिस पिल्ले पर उँगली में काटने का आरोप लगाया था, उसे पकड़ लिया था और कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा लेने की बात सोचते हुए उसकी ज़ख़्मी उँगली जीत के झंडे की तरह उठी हुई दिखाई दे रही थी अर्थात उसके चेहरे पर विजय का भाव छाया हुआ था।

(ख) भीड़ में वह अपनी उँगली का प्रदर्शन जीत में गड़े हुए झंडे के समान कर रहा था। ऐसा करके वह लोगों को अपनी ज़ख़्मी उँगली से परिचित करवाकर, उनकी सहानुभूति जीतते हुए पिल्ले के मालिक से अपने मुआवज़े की माँग को पक्का करना चाहता था।

(ग) कुत्ते की आँखों में आतंक की छाप इसलिए थी क्योंकि ख्यूक्रिन ने उसकी पिछली टाँग खींचकर उसे गिरा दिया था और उसे चारों तरफ़ से भीड़ ने घेर लिया था।

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 21.

ओचुमेलॉव की चारित्रिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ओचुमेलॉव की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **अस्थिर चित्त का व्यक्ति**– ओचुमेलॉव एक अस्थिर चित्त का व्यक्ति था। वह क्षण-क्षण अपना निर्णय बदलता था। एक क्षण पहले जो कुत्ता उसे भद्दा, मरियल और आवारा लग रहा था। दूसरे ही 'क्षण' कुत्ते के मालिक की हैसियत जानकर वही कुत्ता उसे 'सुंदर डॉगी' नज़र आने लगा। शिकायत कर्ता पर ही दोष मढ़ने में उसने, तनिक भी देर न लगाई। ये घटनाएँ उसकी अस्थिर वृत्ति को ही दिखाती हैं।

(*ii*) **अवसरवादी/मौकापरस्त**– ओचुमेलॉव अत्यधिक मौकापरस्त इंसान था। थाली के बैंगन की तरह वह जहाँ अपना लाभ देखता वहीं लुढ़क जाता था। कभी वह आम आदमी का पक्ष लेता नज़र आता है, तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ ही खिलवाड़ करता नज़र आता है। उसका एक मात्र उद्देश्य था– स्वार्थपूर्ति करना।

(*iii*) **नितांत स्वार्थी एवं मक्कार**– ओचुमेलॉव ने ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहरा दिया था। वह कुत्ते का पक्ष लेकर जनरल साहब से शाबाशी चाहता था। उसने अपने सिपाही येल्दीरीन से कहा कि वह उस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाए। उसने यह संदेश भी भिजवाया कि यह कुत्ता उसे मिला था। उसने (ओचुमेलॉव) ने ही यह कुत्ता उनके पास भिजवाया है, ऐसा करके वह जनरल साहब से लाभ उठाना चाहता था।

(*iv*) **चापलूस प्रवृत्ति**– ओचुमेलॉव बहुत चापलूस था वह पहले ख्यूक्रिन का पक्ष लेकर कुत्ते को भला-बुरा कहता रहा। उसे जैसे ही पता चला कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है तो वही कुत्ता उसे सुंदर 'डॉगी' लगने लगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ओचुमेलॉव अत्यंत चालाक, स्वार्थी, अवसरवादी, भ्रष्ट तथा मक्कार व्यक्ति था।

Question 22.

ओचुमेलॉव कौन था? कुत्ते के बारे में ओचुमेलॉव के विचारों में परिवर्तन क्यों आ गया? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर उल्लेख कीजिए।

Answer:

ओचुमेलॉव एक लालची, चालाक व भ्रष्ट में पुलिस इंस्पेक्टर था। कुत्ते के बारे में ओचुमेलॉव के विचारों में परिवर्तन इसलिए आ गया क्योंकि भीड़ से किसी ने यह बताया था कि यह कुत्ता जनरल झिगालॉव का है। जनरल का नाम सुनते ही ओचुमेलॉव ने गिरगिट की तरह रंग बदल लिया और ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहराने लगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 23.

'गिरगिट' कहानी के शीर्षक की क्या सार्थकता है? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

किसी भी रचना का शीर्षक नायक-नायिका, किसी घटना, उद्देश्य या किसी संदेश के आधार पर भी रखा जा सकता है। शीर्षक प्रतीकात्मक भी हो सकता है। प्रस्तुत कहानी 'गिरगिट' का शीर्षक एक प्रतीकात्मक शीर्षक है। गिरगिट एक ऐसा जीव होता है जो शत्रु से स्वयं को बचाने के लिए आस-पास के वातावरण के अनुसार अपना रंग बदल लेता है। प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र ओचुमेलॉव भी ऐसा ही व्यक्ति है। वह अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार अपनी बात, व्यवहार और दृष्टिकोण को बार-बार बदल लेता है। वह वास्तव में अवसरवादी है और गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला है। कभी वह आम आदमी के साथ हो जाता है, तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ खिलवाड़ करता है। उसके व्यक्तित्व में स्थिरता नहीं है। जब तक ओचुमेलॉव को यह पता नहीं चलता कि ख्यूक्रिन को काट खाने वाला कुत्ता जनरल साहब का या उनके भाई का है, तब तक वह कुत्ते व उसके मालिक को कानूनी तौर पर सबक सिखाने का निर्णय करता है। लेकिन जैसे ही उसे यह पता चलता है कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, वैसे ही उसे कुत्ता खूबसूरत व बेकसूर नज़र आने लगता है। कहानी के लिए 'गिरगिट' शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि यह ओचुमेलॉव के व्यक्तित्व की अस्थिरता, चापलूस प्रवृत्ति एवं गिरगिट की तरह रंग बदलने की भावना को प्रकट करने के लिए उपयुक्त है।

Question 24.

ख्यूक्रिन का यह कथन कि मेरा एक भाई भी पुलिस में है.....।' समाज के किस सत्य को उजागर करता है?

Answer:

ख्यूक्रिन का यह कथन कि मेरा भाई भी पुलिस में है...। समाज के इस सत्य को उजागर करता है कि समाज में लोग ऊँचे पद पर बैठे अपने रिश्तेदारों तथा परिचितों के नाम का सहारा लेकर लोगों पर अपना प्रभाव जमाना चाहते हैं। वे उनका नाम लेकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। कहानी में भी ख्यूक्रिन अपने भाई के पुलिस में होने की बात कहकर ओचुमेलॉव और ख्यूक्रिन पर अपना प्रभाव जमाते हुए कुत्ते के मालिक से मुआवज़ा पाने की दलील को मज़बूत करना चाहता था। उसे लगता था कि उसके ऐसा कहने से ओचुमेलौव पर प्रभाव जम जाएगा और वह उसे मुआवज़ा अवश्य दिलवा देगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 25.

'कानून-सम्मत तो यही है कि सब लोग अब बराबर हैं' का आशय स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

यह सभी जानते है कि कानून की नज़र में सब लोग बराबर होते हैं। कानून किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं करता है। यहाँ ख्यूक्रिन भी यही कहना चाहता है। यहाँ यह कथन हमारी हिंदी पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श-भाग-2' में संकलित पाठ 'गिरगिट' से लिया गया है। जब ओचुमेलॉव बार-बार गिरगिट की तरह रंग बदल रहा था, पक्षपातपूर्ण ढंग से बात कर रहा था तब ख्यूक्रिन ने उससे स्पष्ट रूप से कहने का प्रयास किया कि उसके साथ अन्याय नहीं हो सकता। कानून-सम्मत तो यही है कि सब लोग अब बराबर हैं। किसी गरीब और आम आदमी को भी कानून की नज़र में वही स्थान प्राप्त है जो स्थान किसी 'अमीर' अथवा ऊँचे अधिकारी को प्राप्त है। ख्यूक्रिन ओचुमेलॉव से यह स्पष्ट बात कहना चाहता था कि वह कुत्ता किसी जनरल का हो अथवा उसके भाई का, ख्यूक्रिन को न्याय मिलना ही चाहिए। ख्यूक्रिन को मुआवज़ा मिलना ही चाहिए। ख्यूक्रिन किसी तरह भी अपने साथ अन्याय होने देना नहीं चाहता था। वह अपने अधिकार के प्रति सजग था। ख्यूक्रिन इस बात को अच्छी तरह जानता था कि भाषा, धर्म, जाति, धन या क्षेत्र आदि के आधार पर 'कानून' किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं करता है। अपने इस कथन के द्वारा वह 'ओचुमेलॉव' को 'पक्षपात' करने से रोकना चाहता है।

Question 26.

'गिरगिट' कहानी में पुलिस व जनता के संबंधों को किस प्रकार दिखाया गया है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'गिरगिट' कहानी में पुलिस व जनता के संबंधों का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस पाठ में 'पुलिस' के पक्षपातपूर्ण रवैये एवं 'तानाशाही रूप' के यथार्थ को प्रकट किया गया है। इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव के द्वारा आम जनता को डाँटकर चुप करा देना, ख्यूक्रिन को डाँटकर सबके सामने उसका मज़ाक उड़ाना, ख्यूक्रिन के लिए 'बे' और 'तू' जैसे शब्दों का प्रयोग पुलिस के तानाशाही रवैये को दर्शाता है। इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार पुलिस आम-जनता पर अपनी हुकूमत चलाती है, किस प्रकार से पुलिस आम लोगों पर अपना रौब दिखाती है। इस कहानी में पुलिस आदमी के अनुसार कानून चलाती है। आदमी के ओहदे और पैसे को देखकर कानून लागू करती है। हर पल गिरगिट की तरह रंग बदलना, बड़े व अमीर लोगों की चापलूसी करना, उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए जी हुजूरी करना आदि रूपों को देखकर पुलिस की यथार्थ स्थिति को प्रकट किया गया है। इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पुलिस पर जनता को अब विश्वास नहीं रहा और पुलिस ने जनता का भरोसा खो दिया है। अब पुलिस की स्थिति एक 'सेवक' की नहीं है, अपितु 'पुलिस' ने लगभग तानाशाही वाला रूप धारण कर लिया है। पुलिस जनता की 'रक्षक' कम और 'भक्षक' अधिक हो गई है। सेवा की भावना की जगह रिश्वत व भाई-भतीजावाद का बोलबाला हो गया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पुलिस और जनता के संबंध मधुर व विश्वासपूर्ण नहीं हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 27.

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से समाज की किन विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है? पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज की कानून-व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। लेखक अंतोन चेखव ने बताया है कि शासन व्यवस्था पूर्ण रूप से चापलूसों और भाई-भतीजावाद के समर्थक अधिकारियों के भरोसे चल रही है। हर व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार अपनी बात को परिवर्तित करना अच्छी तरह से जानता है। चापलूस अधिकारी सही निर्णय नहीं लेते, जिसका असर समाज पर पड़ता है। पुलिस का व्यवहार आम आदमी के प्रति उपेक्षापूर्ण होता है जिसके कारण आम आदमी को न्याय नहीं मिल पाता। पुलिस सदा अपने तथा अपने बड़े अधिकारियों के हित की बात सोचती है। समाज में उच्च वर्ग का दबदबा है। उन्हीं का आदेश समाज की दिशा निर्धारित करता है, जबकि सामान्य व्यक्ति का अपराध दंडनीय हो जाता है। वर्तमान समाज में भी ऐसी विसंगतियों को देखा जा सकता है। हम देखते हैं कि चापलूस और रिश्वतखोर लोग निरंतर उन्नति कर रहे हैं। कानून और न्यास व्यवस्था में चारों ओर चापलूसों और भ्रष्ट लोगों का ही बोलबाला है। किंतु सफल होने के लिए इसी रास्ते को अपनाते जा रहे हैं। यद्यपि इन विसंगतियों को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु अभी अधिक सफलता नहीं मिल पाई है।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 28.

'गिरगिट' कहानी में लेखक ने समाज की किन विसंगतियों पर व्यंग्य किया है? आप अपने अनुभव के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज की कानून-व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। लेखक अंतोन चेखव ने बताया है कि शासन व्यवस्था पूर्ण रूप से चापलूसों और भाई-भतीजावाद के समर्थक अधिकारियों के भरोसे चल रही है। हर व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार अपनी बात को परिवर्तित करना अच्छी तरह से जानता है। चापलूस अधिकारी सही निर्णय नहीं लेते, जिसका असर समाज पर पड़ता है। पुलिस का व्यवहार आम आदमी के प्रति उपेक्षापूर्ण होता है जिसके कारण आम आदमी को न्याय नहीं मिल पाता। पुलिस सदा अपने तथा अपने बड़े अधिकारियों के हित की बात सोचती है। समाज में उच्च वर्ग का दबदबा है। उन्हीं का आदेश समाज की दिशा निर्धारित करता है, जबकि सामान्य व्यक्ति का अपराध दंडनीय हो जाता है। वर्तमान समाज में भी ऐसी विसंगतियों को देखा जा सकता है। हम देखते हैं कि चापलूस और रिश्वतखोर लोग निरंतर उन्नति कर रहे हैं। कानून और न्यास व्यवस्था में चारों ओर चापलूसों और भ्रष्ट लोगों का ही बोलबाला है। किंतु सफल होने के लिए इसी रास्ते को अपनाते जा रहे हैं। यद्यपि इन विसंगतियों को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु अभी अधिक सफलता नहीं मिल पाई है।

Question 29.

'गिरगिट' कहानी के आधार पर बताइए कि इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव ने कितनी बार और कैसे अपनी बात बदली।

Answer:

इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव ने ख्यूक्रिन से बात करते हुए कई बार अपनी बात बदली। पहले तो उसने ख्यूक्रिन को न्याय दिलाने का आश्वासन देते हुए कुत्ते के मालिक के बारे में पता लगाने के लिए कहा। जैसे ही किसी ने ओचुमेलॉव को बताया कि वह कुत्ता जनरल झिगालॉव का है, तो इंस्पेक्टर को पसीना आ गया और वह ख्यूक्रिन को ही कसूरवार ठहराने लगा। ओचुमेलॉव ने ख्यूक्रिन से कहा कि उसकी उँगली में कील चुभने से खून बह रहा है। फिर भीड़ से आवाज़ आई कि कुत्ता जनरल साहब का नहीं है, तो ओचुमेलॉव उस कुत्ते को 'मरियल पिल्ला' कहकर कुत्ते के मालिक को मज़ा चखाने की बात कहने लगा। फिर जब उसे किसी ने बताया कि वह कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, तो वही 'मरियल पिल्ला' उसे सुंदर डॉगी लगने लगा। उसने ख्यूक्रिन को ही उलटा डाँटना शुरू कर दिया। इसपर भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँसने लगी।

Question 30.

'गिरगिट' कहानी के आधार पर लिखिए कि जनरल साहब के भाई का कुत्ता जानकर ओचुमेलॉव ने क्या कहा और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

जैसे ही ओचुमेलॉव को किसी ने बताया कि वह कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, तो ओचुमेलॉव के होश उड़ गए। वह तुरंत कुत्ते को पुचकाते हुए 'प्यारा सा डॉगी' कहने लगा। फिर ओचुमेलॉव ने आश्चर्य प्रकट किया कि जनरल साहब के भाई इसी शहर में हैं और वह उनसे अब तक मिलने नहीं जा सका। ओचुमेलॉव ने उनके पास कुत्ते को भेजने के लिए कहकर, यह भी बताने के लिए कहा कि इसे ओचुमेलॉव ने खुद उनके पास भिजवाया है। इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ओचुमेलॉव एक चापलूस और भ्रष्ट पुलिस वाला था। अपनी तरक्की पाने के लिए वह जनरल साहब के भाई को खुश करना चाहता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 31.

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से लेखक ने शासन के किस स्वरूप को उजागर किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

'गिरगिट' कहानी एक श्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी में रूस के महान लेखक ने एक ऐसे अवसर का वर्णन किया है जब जारशाही शासन चापलूसों और भाई-भतीजावाद के पोषक अधिकारियों के बल पर चल रहा था। इस स्थिति में ऐसे अधिकारी न तो कानून की रक्षा कर पाते थे और न ही आम आदमी को न्याय दिला पाते थे। इस कहानी के माध्यम से कानून व्यवस्था पर बहुत कठोर व्यंग्य किया गया है। चापलूस व अवसरवादी अधिकारी सही निर्णय नहीं ले पाते हैं और समाज पर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है। पुलिस का व्यवहार आम आदमियों के प्रति उपेक्षापूर्ण होता है, जिसके कारण आम आदमियों को न्याय नहीं मिल पाता है। अधिकारी केवल अपने हित की बात सोचते हैं– आम लोगों का अधिकारियों पर से विश्वास उठ जाता है। समाज में उच्च वर्ग का दबदबा है। उच्च वर्ग का आदेश समाज की दिशा निर्धारित करता है, जिससे निर्दोष आम-आदमी को सज़ा मिलती है। वर्तमान समाज में ऐसी विसंगतियों को देखा जा सकता है। हम देखते हैं कि चापलूस और रिश्वतखोर लोग उन्नति कर रहे हैं। कानून और न्याय व्यवस्था में चोरों, चापलूसों और भ्रष्ट लोगों का ही बोलबाला है। लोग सफल होने के लिए इसी रास्ते को अपनाते जा रहे हैं। यद्यपि इन विसंगतियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है, किंतु अभी तक कोई बहुत बड़ी सफलता नहीं मिल पाई है।

Question 32.

यह जानने पर कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, ओचुमेलॉव के विचारों में क्या परिवर्तन आया और क्यों? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ओचुमेलॉव एक अवसरवादी, चालाक तथा परिस्थितियों के अनुसार गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला अफ़सर था। ख्यूक्रिन का मसला सुन पहले तो वह बोलता गया कि तुम्हें पूरा इंसाफ़ मिलेगा। मैं कुत्ते के मालिक से तुम्हें पूरा हर्ज़ाना दिलवाऊँगा। कुत्ते को इस तरह सड़क पर छोड़ने की उन्हें सज़ा मिलेगी। परंतु जैसे ही ओचुमेलॉव को किसी ने बताया कि वह कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, तो ओचुमेलॉव के हाव-भाव बदलने लगे। वह तुरंत पुचकारते हुए कुत्ते को 'प्यारा सा डॉगी' कहने लगा। फिर ओचुमेलॉव ने आश्चर्य प्रकट किया कि जनरल साहब के भाई इसी शहर में हैं और वह उनसे अब तक मिलने नहीं जा सका। ओचुमेलॉव ने उनके पास कुत्ते को भेजने के लिए कहकर यह भी बताने के लिए कहा कि इसे ओचुमेलॉव ने खुद उनके पास भिजवाया है। इन बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ओचुमेलॉव एक भ्रष्ट और चापलूस पुलिस वाला था। और यह जानने पर कि कुत्ता जनरल साहब का है उसने अपना रंग बदल लिया, यानी ख्यूक्रिन को न्याय दिलाने के बजाए उसे ही दोषी करार दे कर, डाँटकर चुप कर दिया।

Question 33.

'गिरगिट' कहानी के शीर्षक की सार्थकता उदाहरण-सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कहानी का शीर्षक 'गिरगिट' सर्वथा उचित प्रतीत होता है। किसी भी कहानी का शीर्षक अपने आप में कहानी के समग्र भाव को समेट लेता है। कहानी का शीर्षक एक प्याज की तरह होता है क्योंकि जिस तरह प्याज के छिलके को हम परत दर परत निकालते रहते हैं, फिर भी प्याज की एक नई परत सामने होती है, इसी प्रकार कहानी का शीर्षक भी कहानी के कलेवर को लेकर चलता है। कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे ही हमें शीर्षक की सार्थकता प्रतीत होती है।

इस कहानी में ओचुमेलॉव शुरू से लेकर अंत तक गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वह अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार अपनी बात, व्यवहार और अपना दृष्टिकोण बार-बार बदल लेता है। कभी वह ख्यूक्रिन से वादा करता है कि उसे इंसाफ़ दिलाएगा और कुत्ते के मालिक से हर्जाना दिलवाएगा। और कभी ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहरा देता है। उसके व्यक्तित्व में स्थिरता नहीं है। उसे जब तक यह पता नहीं चलता कि काटने वाला कुत्ता जनरल साहब के भाई साहब का है, तब तक वह कुत्ते और उसके मालिक को कानूनी तौर पर सबक सिखाने की बात करता है, परंतु उसे जैसे ही पता चलता है कि वह कुत्ता जनरल साहब के भाई का है, तो वह ख्यूक्रिन को भला-बुरा कहने लगता है और वह कुत्ता उसकी नज़र में प्यारा डॉगी बन जाता है। ख्यूक्रिन की हालत पर भीड़ हँसने लगती है। ओचुमेलॉव की अस्थिरता, अवसरवादिता और बात बदलने की आदत की दृष्टि से यह शीर्षक उचित है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 34.

'गिरगिट' कहानी में समाज की किन विसंगतियों की ओर ध्यान दिया गया है? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

'गिरगिट' कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज की कानून-व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। लेखक अंतोन चेखव ने बताया है कि शासन व्यवस्था पूर्ण रूप से चापलूसों और भाई-भतीजावाद के समर्थक अधिकारियों के भरोसे चल रही है। हर व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार अपनी बात को परिवर्तित करना अच्छी तरह से जानता है। चापलूस अधिकारी सही निर्णय नहीं लेते, जिसका असर समाज पर पड़ता है। पुलिस का व्यवहार आम आदमी के प्रति उपेक्षापूर्ण होता है जिसके कारण आम आदमी को न्याय नहीं मिल पाता। पुलिस सदा अपने तथा अपने बड़े अधिकारियों के हित की बात सोचती है। समाज में उच्च वर्ग का दबदबा है। उन्हीं का आदेश समाज की दिशा निर्धारित करता है, जबकि सामान्य व्यक्ति का अपराध दंडनीय हो जाता है। वर्तमान समाज में भी ऐसी विसंगतियों को देखा जा सकता है। हम देखते हैं कि चापलूस और रिश्वतखोर लोग निरंतर उन्नति कर रहे हैं। कानून और न्यास व्यवस्था में चारों ओर चापलूसों और भ्रष्ट लोगों का ही बोलबाला है। किंतु सफल होने के लिए इसी रास्ते को अपनाते जा रहे हैं। यद्यपि इन विसंगतियों को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु अभी अधिक सफलता नहीं मिल पाई है।

Question 35.

ओचुमेलॉव के चरित्र की क्या विशेषताएँ थीं? अपने शब्दों में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ओचुमेलॉव की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **अस्थिर चित्त का व्यक्ति**– ओचुमेलॉव एक अस्थिर चित्त का व्यक्ति था। वह क्षण-क्षण अपना निर्णय बदलता था। एक क्षण पहले जो कुत्ता उसे भद्दा, मरियल और आवारा लग रहा था। दूसरे ही 'क्षण' कुत्ते के मालिक की हैसियत जानकर वही कुत्ता उसे 'सुंदर डॉगी' नज़र आने लगा। शिकायत कर्ता पर ही दोष मढ़ने में उसने, तनिक भी देर न लगाई। ये घटनाएँ उसकी अस्थिर वृत्ति को ही दिखाती हैं।

(*ii*) **अवसरवादी/मौकापरस्त**– ओचुमेलॉव अत्यधिक मौकापरस्त इंसान था। थाली के बैंगन की तरह वह जहाँ अपना लाभ देखता वहीं लुढ़क जाता था। कभी वह आम आदमी का पक्ष लेता नज़र आता है, तो कभी भाई-भतीजावादी और चापलूस बनकर कानून के साथ ही खिलवाड़ करता नज़र आता है। उसका एक मात्र उद्देश्य था– स्वार्थपूर्ति करना।

(*iii*) **नितांत स्वार्थी एवं मक्कार**– ओचुमेलॉव ने ख्यूक्रिन को ही दोषी ठहरा दिया था। वह कुत्ते का पक्ष लेकर जनरल साहब से शाबाशी चाहता था। उसने अपने सिपाही येल्दीरीन से कहा कि वह उस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाए। उसने यह संदेश भी भिजवाया कि यह कुत्ता उसे मिला था। उसने (ओचुमेलॉव) ने ही यह कुत्ता उनके पास भिजवाया है, ऐसा करके वह जनरल साहब से लाभ उठाना चाहता था।

(*iv*) **चापलूस प्रवृत्ति**– ओचुमेलॉव बहुत चापलूस था वह पहले ख्यूक्रिन का पक्ष लेकर कुत्ते को भला-बुरा कहता रहा। उसे जैसे ही पता चला कि कुत्ता जनरल साहब के भाई का है तो वही कुत्ता उसे सुंदर 'डॉगी' लगने लगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ओचुमेलॉव अत्यंत चालाक, स्वार्थी, अवसरवादी, भ्रष्ट तथा मक्कार व्यक्ति था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in